कसक

डॉ. पूनम तुषामड़
9278944156

जब छोटी थी तो, अम्मा (दादी)को अक्सर कहते सुना 'लड़कियां तै आटे की लोई बरगी हों सै, जै बाहर रखो तो चील कव्वों का डर, अर जै भीतर रखो तो चूहों का डर' पर न जाने क्यों दादी की इस कहावत पर कभी कान नहीं धरे। कभी उनसे इस का अर्थ नहीं पूछा। युवा हुई तो खुद ही इस कहावत का अर्थ दादी की रोक-टोक के रूप में ले लिया।

जब इस कहावत के मायने समझ में आए तो स्त्री रूप में मेरा समूचा अस्तित्व जैसे किसी अनजान असुरक्षा बोध से सिहर उठा, किंतु फिर से कुसुम अपने आत्मविश्वास को जुटाकर आगे बढ़ती रही।

मैं अक्सर अपने आस-पास की बस्तियों में आती-जाती रहती हूं। जिस समाज या परिवेश में पल कर बड़ी हुई हूँ। उससे मेरा रिश्ता अंतस से जुड़ा है, इसलिए वहां के लोग उनका जीवन, औरतें, बच्चे, बुजुर्ग सब के दुख-सुख साझा करने जब तब पहुंच ही जाती हूँ। बहाना कोई भी हो, उद्देश्य एक ही होता है उनके जीवन के अनदेखे-अनकहे को सुनना, समझना, और जो बन पड़े, सो करना। इतना ही नहीं कई बार तो अपनी लेखनी को उनकी जुबानी कहना भी।

इस बार जब गई तो अकेली नहीं थी मेरे साथ मेरे कई साथी भी थे। हम महिलाओं के साथ होने वाली शारीरिक हिंसा, उत्पीड़न और बलात्कार जैसी घटनाओं पर वहाँ के लोगों के बीच चर्चा कर ही रहे थे। मेरी नजर महिलाओं के समूह के पीछे आकर खड़ी हुई लड़की पर पड़ी। मुझे वह लड़की अत्यंत बेचैन, उलझी-सी और बेहद घबराई सी महसूस हुई। मैंने आँखों के इशारे से उसे भी वहाँ बैठकर बात सुनने को कहा किंतु वह नहीं बैठी।

वहीं दरी पर बैठी उसकी सहेली जो उसकी हम उम्र भी थी, ने भी उससे वहीं बैठ जाने का आग्रह किया पर वह फिर भी खड़ी रही। एक-दो पास ही बैठी महिलाओं ने भी जब उसे कुछ डांटते हुए, बैठकर बात सुनने को कहा तो वह चिड़चिड़ा कर दूर हटते हुए कहने लगी, 'इस सब से क्या होगा? मुझे नहीं बैठना यहाँ।' उसके ये वाक्य मेरे अंतर्मन में कहीं बिजली से कौंध गए। मैंने उसी क्षण उसे बेहद गौर से देखा तो उसकी आंखों में अजीब

सा खौफ तैरता-सा महसूस किया। उसके चेहरे पर अजीब तरह के भाव आ-जा रहे थे, जैसे अपने भीतर की परेशानी, गुस्से, तनाव व बेबसी को वह बलपूर्वक रोकना भी चाहती हो और कहना भी। उसके भीतर का द्वंद्व उसकी झपकती आँखों और एक दूसरे पर बेवजह मसले जा रहे हाथों पर साफ तौर पर देखा जा सकता था।

मैंने अपने स्थान पर बैठे हुए ही आवाज देकर उसे अपने पास बुलाते हुए कहा, 'सुनो! क्या बात है, इधर आओ मेरे पास।' उसने उसी तनाव भरी नजरों से मेरी ओर देखा और कुछ सोचकर अपनी सहेली के पास ही बैठ गई। मेरी नजरें अब भी उसी पर टिकी थीं। न जाने क्यों पर अब मेरी नजर रह रह कर उस पंद्रह-सोलह साल की युवती पर अटक गई थी। गौरा रंग, सुनहरे बाल, सामान्य कद, स्वस्थ सामान्य देह, न अधिक पतली न अधिक मोटी। सामान्य नयन नक्श। सलीके से काढ़े बाल, इस्त्री किये हुए सलवार कमीज के ऊपर मैचिंग दुपट्टा लिए हुए वह देखने पर कोई पढ़ी-लिखी समझदार लड़की लग रही थी, जो वहां बैठी सभी महिलाओं और युवतियों में बिल्कुल अलग दिख रही थी।

मैं उसी क्षण अपनी जगह से उठी और उसके पास जाकर बैठ गई। मैंने उसके कंधे पर आत्मीयता से हाथ रखते हुए पूछा, 'क्या नाम है तुम्हारा?'

उसने अपने उसी चिड़चिड़े अंदाज में जवाब दिया, 'नाम बता कर क्या होगा?'

पास बैठी उसकी सहेली ने कहा, 'नाम तो बता दे।'

उसने उसको भी धीरे-से झिड़क दिया। फिर भी उस लड़की ने उसका नाम बताया 'कुसुम'।

मैं चूंकि अब उसके बिल्कुल नजदीक बैठी थी तो उसकी भीतर और बाहर की बेचैनी को महसूस कर पा रही थी। उसके एक-दूसरे मैंने उलझे कांपते हांथो पर अपना हाथ रखते हुए जब उसके चेहरे की ओर देखा तो न जाने क्या था उन आँखों में कि मैं अंदर से हिल गई।

कुसुम के दोनों हाथ अपने हाथों में लेते हुए मैंने उसे विश्वास दिलाने की कोशिश की कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हें किसी से भी डरने-घबराने की जरूरत नहीं है।

कुसुम, 'मैं कहां घबरा रही हूं? मैं क्यों घबराऊँ?'

मैंने उससे बड़े प्यार से पूछा, 'कुसुम तुमने अभी ये क्यों कहा कि इस सब से कुछ नहीं होने वाला।'

कुसुम थोड़ा घबड़ाते हुए ही बोली, 'नहीं-नहीं, कुछ नहीं कहा मैंने, मेरे मम्मी-पापा भी कहते हैं। मेरा दिमाग चल गया है, कुछ भी बोलती हूँ। गले में बंधे तावीज को पकड़ कर कहने लगी, 'देखो मैं बहुत बीमार हुई तो मम्मी ने गांव से ये तावीज मंगा कर बांधा है।'

उसके इस अजीब से व्यवहार से मैं थोड़ी परेशान हो उठी। फिर भी मैंने दोबारा उसी अपनत्व के साथ उससे पूछा, 'अच्छा बताओ कुसुम तुम्हें क्यों लगता है, इस सब से कुछ नहीं होगा?'

कुसुम मुझसे थोड़ा झेंपते हुए, 'हाँ तो क्या गलत कहा, आप लोग आज बात करके, भाषण देके चले जाओगे। क्या तुम किसी का कुछ बिगाड़ सकते हो। जब अपने ही दुश्मन हो जाएंगे तो तुम क्या कर लोगे, मैं या कोई क्या कर लेंगे।'

अब मुझे उसकी बातों से सचमुच खौफ नजर आने लगा। पास बैठी महिलाओं ने भी उसकी बातें सुनकर उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिए कह दिया, 'बेटी घबराओ नहीं बेटी, अगर कोई बात है तो दीदी को बता दो। वे तुम्हारी मदद जरूर करेंगी।'

कुसुम, फिर साथ बैठी महिला की ओर देखकर कहने लगी, 'आंटी मेरी मम्मी को कुछ मत बताना वर्ना वो फिर मुझे गाँव भेज देगी। मुझे गांव नहीं जाना।'

मैंने वहां बैठी महिला जिसे वह आंटी कह रही थी पूछा, 'क्या बात है? क्या ये लड़की आपकी पड़ोसी है? आखिर ऐसी क्या बात है। जिसकी वजह से ये बहुत परेशान लग रही है। मुझे लग रहा है कि कोई तो बात है जिसे ये बताना भी चाहती है और छुपाना भी।'

उस महिला ने थोड़ा परेशान होते हुए बताया, 'ज्यादा तो पता नहीं है, हमें पर इसके घर में रोज ही लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। इसके माँ बाप दो-तीन साल से यहां किराये पर रहते हैं। मां फैक्ट्री में जाती है। बाप जाने क्या करे है। जब देखो नशे में धुत रहवे। इससे छोटा एक भाई और एक बहन भी हैं। पहले तो वे बालक ही माँ-बाप के साथ रहते थे। ये तो अभी सात-आठ महीने पहले ही गांव से आई है। जब से ये आई है, तब से इसकी माँ ज्यादा किसी से बात नहीं करने देती। कहती है बीमार है।

मैंने जब कुसुम को दोबारा इस दृष्टि से निहारा कि वह कहां से बीमार

दिखती है। तो मुझे असमंजस मे पड़ा देख कर उसी स्त्री ने धीरे से कहा, 'कोई ऊपरी चक्कर है।'

उस स्त्री के इस वाक्य ने मुझे खिन्न कर दिया। मैंने थोडी झुंझलाहट के साथ कुसुम की ओर देखा जो वहां उपस्थित मेरी दूसरी महिला साथी द्वारा बताई गई महिला उत्पीड़न की बातों को गौर से सुन रही थी। फिर न जाने क्या हुआ कि वह वहां बैठी अपनी सहेली को हाथ पकड़कर नीचे से उठाने लगी। मैंने थोड़ा पास आकर पूछा, 'क्या हुआ? उसे कहां ले जा रही हो तुम भी बैठ जाओ और सुनो।'

वह तुनक कर बोली 'इस सब से क्या होगा? ये सब हमें पता है। पुलिस भी ऐसे लोगों को कुछ नहीं करेगी।'

अब मेरा धैर्य डगमगाने लगा मस्तिष्क किसी अनहोनी की ओर संकेत करता महसूस हुआ। मैंने अपनी मित्र को पास बुला कर कहा, 'नीलम इस बच्ची के साथ कुछ तो समस्या है, न जाने क्यों मुझे लग रहा है, कुछ ठीक नहीं है। सो तुम आज की चर्चा को संभालो। मुझे इस बच्ची से बात करनी है।'

नीलम ने धीरे से कहा, 'तुम फिक्र मत करो। मैं सम्भाल लूंगी। तुम जाओ उससे बात करो। यहां सविता दी हैं मेरे साथ।'

मैं वापस मुड़ी तो देखा, 'कुसुम और वह लड़की अपनी जगह से उठ कर कुछ दूर खड़े हैं। कुसुम के साथ गई वह लड़की उस पर नाराज हो रही है। कुसुम से अपना हाथ छुड़ा कर वह वापस वही आकर बैठ गई।

मैंने महसूस किया कि कुसुम अब भी उसी जगह पर जस की तस खड़ी है। इस बार उसके चेहरे पर अजीब-सी विवशता है। मैंने उसके पास जाकर धीरे से पूछा, 'क्या हुआ, गई नहीं तुम? तुम तो घर जा रही थी ना?' उसने थोड़ा झिझकते हुए कहा, 'नहीं गई।'

मैंने फिर पूछा, 'लेकिन क्यों?'

कुसुम मेरे सवाल से झुंझला कर बोली, 'क्योंकि वो नहीं जा रही।'

मैंने उससे कहा, 'वो नहीं जाना चाहती तो तुम भी बैठ जाओ।'

कुसुम की झुंझलाहट उसके चेहरे पर ठहर गई थी, मेरे अनुरोध पर उसने कहा, 'मुझे नहीं बैठना यहां।'

मैं दरअसल उसे जानने का प्रयास कर रही थी, फिर भी मैंने कहा, 'अरे! तुम चली जाओ। वो थोड़ी देर में आ जाएगी।'

कुसुम थोड़ी घबड़ाते हुए अपने हाथों और पैरों को एक-दूसरे पर मसलते हुए बोली, 'मैं अकेली घर नहीं जा सकती। मुझे डर लगता है।'

मैंने थोड़ा सतर्क होते हुए पूछा, 'डर! किससे डर लगता है तुम्हें, दिन के समय में?'

कुसुम संकुचलता हुए बोली, 'किसी से नहीं।'

मैंने उसके दोनो हाथों को मजबूती से अपने हाथों में थामकर कहा, 'देखो कुसुम मैं चलती हूं तुम्हारे साथ, तुम बिल्कुल मत घबराओ। मुझे बताओ, किस से डर लगता है तुम्हें।

कुसुम ने थोड़ा लड़खड़ाते हुए कहा, 'वो घर पर पापा है न, उसने शराब पी रखी है। मुझे देखते ही गंदी गंदी गाली देता है। मम्मी घर पर नहीं है न। काम पर गई है। मेरे बहन-भाई भी स्कूल गए हैं मम्मी मना करके जाती है कि जब तेरा बाप घर पर हो, तू घर में मत जाना।' फिर उसने अपनी उसी सहेली की ओर इशारा करके कहा, 'जब तक मेरे भाई-बहन स्कूल से नहीं आते मैं उसके ही घर रहती हूं। ये भी स्कूल नहीं जाती। इसकी मां भी उसी फैक्टरी में काम करती है। इसका भी एक छोटा भाई है।' कहते हुए उसने मेरी ओर जैसे ही देखा। न जाने क्या था, उसके मासूम और विवश चेहरे में कि मैंने उसे बाहों के घेरे में ले लिया और कहा, 'चलो! तुम यहां नहीं बैठना चाहती तो हम कहीं ओर चलते हैं। मैंने उसे अपने साथ, वहां चल रहे कार्यक्रम से बहुत दूर पार्क में ले आई और एक बैंच पर इत्मीनान से बैठाया। फिर बेहद आत्मीयता और स्नेह से उसे विश्वास में लेकर कहा, 'कुसुम तुम बहुत प्यारी हो बिल्कुल अपने नाम की तरह। तुम तो बहुत बहादुर भी हो। समझदार भी। फिर तुम्हारी मम्मी क्यों तुम्हें मना करती हैं और तुम क्यों डरती हो अपने बाबा से उन्हें जोर से डांट दिया करो। खबरदार! जो मुझे गाली दी।'

कुसुम ने घबराते हुए कहा, 'नहीं नहीं! पापा बहुत गंदा आदमी है। वो मुझे मेरे मा..मामा को लेकर गालियां देता है। मम्मी से भी झगड़ता है। मां को और हमें मारता है।'

जब कुसुम ये बात कह रही थी, मैं उसे गौर से निहार रही थी। तभी मैंने देखा, मामा कहते हुए, उसके चेहरे के भाव बदल गए थे। अत्यंत घृणा से भरे भाव थे उसके चेहरे पर।

मैंने उसके चेहरे को प्यार से सहलाया उसके कंधे को प्यार से थप थपाते हुए एक हाथ से अपनी साथी को फोन करके कहा, 'हम कार्यक्रम में बांटने के लिए जो सामग्री लाए है

(फ्रूटी, छोटी पानी की बोतल और स्नैक्स के पैकेट) वे कुसुम के लिए किसी के हाथ भिजवाए शीघ्र।

साथी ने फोन पर कहा, 'ठीक है।' फिर तुरंत एक बच्चे के हाथ जहाँ हम बैठे थे, सामग्री भिजवा दी।

कुसुम को थोड़ा नॉर्मल करते हुए मैंने कुसुम से कहा, 'कुसुम लो पहले पानी पी लो और ये फ्रूटी और स्नेक्स भी तुम्हारे लिए हैं। ये खा लो।

कुसुम थोड़ा झिझकते बोली, 'नहीं मैं ये नहीं खाऊंगी।'

मैंने उसे थोड़े और प्यार से कहा, 'खा लो ये तुम्हारे लिए ही है।'

इस बार उसने मेरे हाथ से वह सामग्री ले ली और धीरे-धीरे पहले पानी पिया, फिर स्नेक्स का पैकेट खोलकर देखा और उसमें से चिप्स निकाल कर खाने लगी। फिर फ्रूटी भी खोली और उसमें स्ट्रा डालकर धीरे-धीरे पीने लगी। उसे थोड़ा नॉर्मल होते देख, मैंने पूछा, 'कुसुम तुम अपने बहन भाई से प्यार करती हो।'

कुसुम धीरे से फ्रूटी का सीप लेते हुए और नजरे नीचे गड़ाए हुए केवल, 'हम्मम' कहती है।

मैंने पूछा, 'और तुम्हारे भाई-बहन?

वह थोड़ा रुकी फिर कुछ सोचकर बोली, 'पता नहीं।' कभी-कभी लड़ पड़ते हैं और कहते हैं, वापस जा वही गांव में।'

मैंने उसे खुलते हुए देख आगे पूछना शुरू किया, 'और तुम्हारी मम्मी?' इस बार उसने अपने हाथ में पकड़ी फ्रूटी और स्नैक्स का पैकेट बेंच पर रख दिया और मेरी ओर फिर उसी प्रकार के भय से देखते हुए पूछने लगी, 'आप किसी को भी नहीं बताएंगी ना। मम्मी मेरी वजह से बहुत परेशान रहती है। कभी मुझे प्यार करती है कभी बहुत गुस्सा करती है। वो...।' कुसुम कहते-कहते फिर रुक गई।

मैंने उसके सिर पर प्यार से हाथ फिराते हुए पूछा, 'क्या हुआ?'

कुसुम उसके मन का संकोच भी खत्म नहीं हुआ था, वह बहुत संभल कर बोल रही थी, 'कुछ नहीं। वो मम्मी कहती है, मेरा दिमाग ठीक नहीं है न। कुछ भी बोलती हूं। टाइम कितना हुआ है, मुझे घर जाना है। मेरे भाई-बहन आ गए होंगे स्कूल से।'

मैंने उसे परेशान देख कर मोबाइल में टाइम देखा और कहा, 'अभी दोपहर के बारह बजे हैं। कुसुम अभी तो टाइम है।' वह थोड़ी निश्चिंत हुई।

मैंने फिर से कुसुम से जानने की कोशिश की और पूछा, 'अच्छा बताओ! तुम तो छोटेपन से नानी के घर रही हों। फिर वापस यहाँ क्यों आ गई। तुम्हारा मन करता है वापस जाने का।'

कुसुम अबकी बार मेरे प्रश्न पर जैसे बौखला गई। उसका स्वर तेज हो गया, उसने कहा, 'नहीं! बिल्कुल नहीं।'

मैंने उसके चेहरे पर क्रोध और खौफ के मिश्रित भाव देखें। उसका चेहरा जैसे तमतमा गया था और वह गुस्से से कांप रही थी। मैंने उसे बहुत प्यार के साथ अपने करीब बैठाया और उसके कंधे पर प्यार से हाथ रखते हुए पूछा, 'अच्छा! अच्छा तुम डरो नहीं। कुसुम मुझे बताओ, मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम मेरी बेटी जैसी हो।'

कुसुम ने मेरे चेहरे को कुछ पलों के लिए गौर से निहारा, जैसे सोच रही हो कि मुझपर विश्वास करें या नहीं। उसका भरोसा मुझपर जमने लगा था और अब उसने धीरे-धीरे बताना शुरू किया, 'वो मेरे बहन-भाई है न, वे जुड़वां हैं। नानी कहती थी, तेरे नशेड़ी बाप ने मेरी बेटी की जिंदगी खराब कर दी। तेरे होने के बाद बस दो-तीन साल थोड़ी सुखी रही, फिर ये तेरे जुड़वां भाई-बहन उसकी जान को आ गए। नानी पापा को बहुत गालियां देती और कहती थी, नासपीटा काम का, न काज का, दुश्मन अनाज का। मेरी बेटी काम करके घर चलाती कि तुम तीन-तीन को पालती। वो भी किराए के मकान में रहकर, इसलिए तुझे मेरे पास छोड़ गई। वे दोनों तो छोटे थे। नानी ने वैसे मुझे बहुत प्यार किया। वो मुझे मां से मिलाने को भी लाती थी। मां भी बीच-बीच में गांव आती थी। नानी ने मेरा गांव के स्कूल में दाखिला भी कराया। जहाँ मैं पांचवीं तक खुशी से पढ़ी। तब तक सब ठीक था।' कहकर वह चुप हो गई।

मैंने उसका हाथ अपने हाथों में लेकर सहलाते हुए उसकी ओर देखकर पूछा, 'फिर? उसके बाद क्या हुआ कुसुम मुझे बताओ, घबराओ मत। मैं तुम्हारे साथ हूं।'

उसने नजरे नीची किए हुए ही बताया, 'पांचवीं के बाद उसका दाखिला गांव के ही दूसरे बड़े स्कूल में करवा दिया जो घर से थोड़ा दूर था। जहाँ मेरा बीच वाला मामा भी पढ़ता था।' कह कर वह फिर चुप हो गई।

मैंने मन में उठ रही किसी वीभत्स आशंका के वशीभूत होकर पूछा, 'बीच वाला मामा? मतलब कितने मामा हैं तुम्हारे।

उसने निराश आंखों से मेरी ओर देख कर कहा, 'तीन हैं। बड़े मामा की

तो शादी हो गई। ज्यादा नहीं पढ़े। ये वाला मामा तब नौवीं में फेल हुआ था। वही मुझे स्कूल साथ लेकर आता-जाता था।'

मैंने फिर पूछा, 'और छोटा मामा?

कुसुम ने आगे बताया, 'वह तब आठवीं में ही था।' कुसुम ने थोड़ा रुक कर कहना शुरू किया, 'पहले सब कुछ ठीक था। नानी और तीनों मामा मुझे बहुत प्यार करते थे। धीरे-धीरे सब कुछ बदलने लगा। स्कूल में एक दिन बीच वाले मामा को दौरा पड़ गया। मास्टर जी ने घर पर नानी को खबर भिजवाई। पहले भी एक-दो बार मामा को ऐसे दौरा पड़ता था। मैं समझ नहीं पाती थी। थोड़ी देर बाद वो बिल्कुल ठीक हो जाते थे।'

मैंने गहरी सांस भर कर पूछा, 'फिर?'

उसने इस बार मेरी ओर देखते हुए बेहद घृणा से कहा, 'अच्छा होता कि उसको दौरा कभी ठीक ही न होता। वो मर जाता।'

मैंने उसे और नजदीक करके बिठाते हुए पूछा, 'ऐसा क्यों कह रही हो?'

कुसुम ने बताया, 'क्योंकि वो बहुत गंदा इंसान है। बल्कि इंसान नहीं जानवर है।'

मैंने उसे प्यार से दुलारते हुए पूछा, 'ऐसा क्या हुआ कुसुम।' इस बार उसकी आंखों में आंसू थे। उसने सिसकते हुए कहा, 'मैडम उसने मुझे खराब किया। मेरा रेप किया।' कहकर वह सिसक-सिसक कर रो पड़ी।

मैंने उठकर जल्दी से उसे अपनी आगोश में ले लिया। मामा? सगा मामा... मेरे अंदर जैसे बहुत-कुछ टूटकर बिखर गया। मेरी आँखें से खुद ब खुद आंसू बहने लगे। मैंने उसे अपने बहुपाश में ऐसे जकड़ रखा था, जैसे में अपनी बेटी को बाहर के भेड़ियों से बचाना चाहती हूं। मैंने उसे तब तक ऐसे रखा, जब तक वह थोड़ा सामान्य नहीं हुई।

मैंने धीरे से उसका चेहरा साफ किया और पूछा, 'कुसुम तुम्हारे साथ ये सब कब हुआ? और तुमने किसी को बताया क्यों नहीं।'

कुसुम ने बताया, 'मैंने बताया था मैडम। मैं सातवीं में थी जब मेरे पहली बार पीरियड हुआ तो मुझे कुछ नहीं पता था। मैं स्कूल में थी, पेट में बहुत दर्द हो रहा था। कपड़े खराब देखकर टीचर ने मामा को बुलाकर कहा कि इसे जल्दी घर ले जाओ। उस दिन वही मुझे घर लाया और बड़ी मामी को उसने कहा था कि इसके कपड़े बदलवा दो और दर्द की गोली दे दो। मामी मुझे देखकर थोड़ी परेशान भी हुई।

फिर मामी ने मुझे समझा-बुझाकर, कपड़े बदलवा दिए और गोली भी दे दी। उस दिन नानी के काम से लौट आने तक में मामी के पास ही सोती रही।

अगले दिन सुबह भी मेरा मन स्कूल जाने का नहीं था। नानी मुझे सोता छोड़ काम पर चली गई। छोटा मामा भी स्कूल चला गया। बस वही नहीं गया। वह पहली बार था, जब उसने मुझे डरा धमकाकर, ये सब किया। तबसे मुझे उससे डर लगने लगा। मेरे इस डर का उसने और फायदा उठाया। मां जब भी आती अपना रोना-रोती थी नानी के आगे। मैं साथ चलने की जिद करती तो डांट कर चुप कर देती। कहती, 'वहां तेरा बाप कसाई शराबी तुझे न पढ़ने देगा, न कुछ करने देगा। मैं जब भी किसी को कुछ बताने को होती, वह मुझे सामने खड़ा होकर घूरता। मां की मजबूरी देखकर मैं हमेशा उससे बचती रहती। ज्यादातर दिन में मामी के पास रहती। अब उसे मौका नहीं मिलता था। मैं आठवीं में आ गई जब उसने एक बार कोशिश करनी चाही तो छोटा मामा आ गया और वह कुछ बहाना करके बाहर चला गया।

अब उसके साथ स्कूल भी नहीं जाती। छोटे मामा के साथ जाती और वापस आती। छोटा मामा कई बार पूछता कि मैं अशोक के साथ साइकल पर क्यों नहीं जाती। मैं बहाना बनाती कि मुझे उसके दोस्त अच्छे नहीं लगते।'

मैंने कुसुम से पूछा, 'फिर तुमने किसे बताया।' उसने बताया, 'मामी को।' मेरे मुंह से निकला, 'मामी को?'

कुसुम ने बताया, 'हां। मामी को कुछ शक हो रहा था। उसने एक दिन स्कूल से आने के बाद मुझसे पूछा था कि सच सच बता कुसुम क्या बात है। अशोक से इतना क्यों डरती है। तू पहले तो नहीं डरती थी। कही स्कूल में तेरा कोई चक्कर तो नहीं चल रहा जिसका पता उसे चल गया है। मैं मामी का मुंह हैरानी से देखती रही। फिर मामी ने सख्ती से मुझसे कहा था कि मैं कुछ पूछ रही हूं। तब मैंने रोते-रोते उन्हें बताया कि मेरा कोई चक्कर नहीं चल रहा मामी किसी से, बल्कि मुझे तो.. कहते-कहते मैं सहम गई थी! मामी ने मुझसे पूछना जारी रखा था। उन्होंने पूछा था कि तुझे तो क्या? देख मुझे सच-सच बताना। झूठ मत बोलना मैं तुझे कुछ नहीं कहूंगी और किसी से नहीं कहूंगी।'

कुसुम ने आगे बताया, ' मैडम मैंने

मामी को रोते-रोते सब सच-सच बता दिया। मामी को तो जैसे मेरी बात ने सदमे में ही डाल दिया। वह मेरी माँ को नानी को और मामाओं को सबको बुरी-बुरी गालियां देने लगी। परेशान होकर इधर-उधर फिरने लगी। मुझसे कहने लगी कि देख कुसुम इस बार अपनी मां के साथ चली जइयो चाहे कुछ हो जाए और इस हरामखोर की पुलिस में रिपोर्ट करके जइयो जरूर। आने दे तेरे बड़े मामा और तेरी नानी को आज। तू बिल्कुल मत घबराना। शाम को जैसे ही मामा और नानी आए, मामी ने उन्हें सब कुछ सच-सच बता दिया।

नानी हक्की-बक्की-सी मुझे देखती रही। फिर अशोक मामा को गंदी-गंदी गालियां देने लगी। बड़े मामा और छोटे मामा दोनो गुस्से से पागल हो गए। जैसे ही वह (अशोक) घर में आया। दोनों भाइयों ने उसपर ताबड़-तोड़ लात घूंसे बरसा दिए। बड़े मामा तो बहुत गुस्से में थे, हटते ही नहीं थे। मामी और नानी ने मुश्किल से छुड़ाया। फिर उस दिन उसे फिर दौरा पड़ गया। लड़ाई-झगड़े की सुन कर पुलिस भी आ गई। मैं बहुत रो रही थी। पुलिस वाले ने मुझे देखा तो मुझसे पूछने लगा कि यहां क्या हुआ है। मैं कुछ बोलती उससे पहले नानी आ गई। पुलिस वाले से कहने लगी कि भाई-भाई की आपस की लड़ाई है। मेरे लड़के को दौरा पड़ा है। बच्ची है, घबरा गई है। नानी मुझे डांट कर चुप कर रही थी। फिर मुझे अंदर ले जाकर कहने लगी ..देख छोरी पुलिस के सामने ये सब मत कहना, हमारे साथ-साथ तेरी भी खूब बदनामी होगी। फिर बाहर जाकर पुलिस को जाने क्या कहा और पुलिस वापस चली गई। मामी गुस्से में पैर पटकती हुई वापस अपने कमरे में चली गई। जैसे-तैसे रात कटी। अगले दिन नानी ने मां को बुला लिया और गुस्से में बड़बड़ाते हुए कहा कि ले जा इसको यहां से। मां भी नानी और अपने भाइयों से खूब लड़ी, उन्हें खूब गलियां दी और मुझे लेकर वापस दिल्ली आ गई। फिर कुछ दिन पहले किसी बाबा जी के पास भी लेकर गई थी। जिसने मुझे बीमार बताया है और ये जो ताबीज बंधा है न, ये भी उन्हीं ने दिया है अपने गले में बंधे हुए, काले रंग के धागे को पकड़ते हुए उसने बताया। जब वह बोल रही थी, मैं उसे गौर से देख रही थी। उसके चेहरे पर आने वाले भावों से ये अंदाजा साफ लगाया जा सकता था कि उसे खुद किसी बाबा की बात पर यकीन नहीं है। फिर भी न जाने किस अनजाने भय से उसने मुझे यकीन दिलाना चाहा कि वह किसी प्रेत छाया के प्रभाव में है अथवा मानसिक रूप से बीमार है।

कुसुम की बातों का असर मुझपर ऐसे हुआ जैसे किसी शांत पर्वत की छाती में दर्द से कई ज्वालामुखी एक साथ फट पड़ना चाहते हों। रोम-रोम चीत्कार करता-सा महसूस हुआ।

मैंने उसका हाथ जोर से पकड़ लिया। रोज ब रोज टी. वी. अखबारों, सोशल मीडिया में देखी पढ़ी जाने वाली न जाने कितने ही मासूम बच्चों के चेहरे मेरे इर्द गिर्द मंडराने लगे।

कुसुम ने आगे मुझसे कहा, 'आप मेरी मम्मी को कुछ मत बताना मेंम। उसने किसी से मेरे रिश्ते की बात की है। वह मुझे बहुत मारेगी।' अपने को किसी तरह संयत करके मैंने अपनी साथी को फोन कर धीरे से कहा, 'सविता दी आप जल्दी से यहां आ जाओ।'

मेरी साथी दूसरे साथियों को काम सौंप कर तुरंत ही मेरे पास आ गई। मेरी ओर देखते ही वह समझ गई कि कुछ बहुत बुरा घटा है, उस बच्ची के साथ। फिर भी मैंने जैसे ही उसे कुसुम के बारे में बताया, वह गुस्से से कांपते हुए बोली चलो इसकी मां आ गई होगी तो उससे बात करते हैं और यहां के पुलिस स्टेशन में उस जानवर की रिपोर्ट भी दर्ज करवाते हैं। मैं भी यही चाहती थी किंतु जैसे ही कुसुम ने यह सब सुना, वह बुरी तरह से घबराकर बोली, 'नहीं..! नहीं! आप दोनो रुक जाओ। मुझे नहीं जाना पुलिस स्टेशन। मुझे कुछ नहीं कहना किसी से।' वह लगभग रो पड़ी, 'दीदी प्लीज, मैडम प्लीज मेरी मम्मी बहुत गुस्सा होगी। मेरी बहुत बदनामी होगी। मां कहती है, मेरा मामा तो पागल है। उसका इलाज चल रहा है। पुलिस भी यही कहती है। मैं भी बीमार हूं। मेरा भी इलाज चल रहा है। अगर मैं ऐसे ही उल्टी-सीधी बातें करती रही तो वे मुझे पागलखाने भिजवा देंगी। मुझे नहीं जाना पागल खाने। मुझे कहीं नहीं जाना। फिर मेरी शादी भी नहीं होगी। नहीं। आप किसी को कुछ नहीं कहो। प्लीज मेम। मैंने क्यों ही बताया आपको...। मम्मी सही कहती है मै हूं ही पागल।'

मैंने उसे शांत करते हुए और ढांढस बढ़ाते हुए कहा, 'देखो कुसुम अगर तुम उसके खिलाफ रिपोर्ट नहीं करोगी तो वो फिर किसी के साथ ऐसा कर सकता है।'

कुसुम ने फिर गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'नहीं मेम! अब नहीं करेगा। अब नहीं कर सकता। अब उसकी शादी हो गई है न और मैं तो अब कभी जाऊंगी नहीं वहाँ।

उसकी बात सुनकर और कुछ सोच कर हमने उसे सामान्य किया और कहा, 'अच्छा ठीक है कुसुम तुम परेशान मत हो। हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे। लेकिन तुम पागल बिल्कुल भी नहीं हो बल्कि बहुत समझदार और हिम्मत वाली हो।' मैंने एक पेज पर अपना और अपनी साथी का फोन नम्बर लिखकर उसे देते हुए कहा, 'देखो कुसुम तुमने हमें बताकर कुछ गलत नहीं किया। हम पर विश्वास रखो, जब तक तुम नहीं चाहेगी, हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे बेटी। तुम निश्चिंत रहो। जाओ अपनी सहेली के पास जाकर आराम से बैठो।'

कुसुम ने फोन नम्बर की पर्ची को मुट्ठी में दबा कर, अपना चेहरा चुन्नी से साफ किया और वहां से धीरे-धीरे जाने लगी। मेरी नजरें सजल हो, उस मासूम को जाते देख रही थी... और महसूस हुआ कि इसी क्षण में और न जाने कितनी कुसुम कहाँ-कहाँ इस पीड़ा से जूझने को विवश हैं। जिनकी दस्ताने शायद अनकही ही रह गई होंगी। या रह जाएंगी।

सविता दी ने मुझसे कहा, 'वह बच्ची तो बहुत डरी हुई है। किंतु उस दरिंदे को ऐसे छोड़ देना क्या ठीक रहेगा। आखिर यही तो होता है हमारे समाज में।'

मैं सविता दी की ओर मुड़ी और अपने भीतर का सारा आक्रोश, दुख और घृणा के मिले-जुले भावों को समेटते हुए कहा, 'दी आपने देखा न, वह कितनी डरी हुई है। जबकि मुझसे ये बात करने से पहले तक वह बहुत मुखर व सामान्य दिख रही थी। वह मुझे बता चुकी है कि उसके मां-बाप के संबंध भी आपस में बहुत खराब हैं। घर का माहौल भी अच्छा नहीं है। ऐसे में परिवार का कोई उसका साथ नहीं देगा। ऐसे में वह बच्ची कैसे...।' कहते-कहते मेरा गला रूंध ने लगा था शायद। थोड़ा रुक कर मैंने कहा, 'दी हम इसकी मां से बात करेंगे। देखते हैं वह क्या कहती है। सविता दी ने एक गहरी सांस खींची और कहा, 'ठीक है। अभी बाकी साथियों के पास चलो। कार्यक्रम समापन का समय है। दोपहर के तीन बजने वाले हैं। मैंने सहमति में कहा, 'जी।'

उस दिन कुसुम की मां से हम नहीं मिल सके। लोगों से पता चला फैक्ट्री वालों की छुट्टी देर से होती है।

मैं वहां से चली तो आई किंतु, कई दिन तक सामान्य नहीं हो पाई। रातों को मेरी नींद उड़ गई और कभी सोती तो कुसुम जैसी न जाने कितनी मासूम लड़कियाँ रोती, बिलखती मेरे सपनों में आती और मुझे अपनी चाह कर भी कुछ न कर पाने की छटपटाहट पर बेहद गुस्सा आता।

एक दिन कॉलेज से लौटते हुए। कुसुम के बारे में सोचते हुए ही तय किया कि उसकी मां से मिला जाए। शाम के पांच बज रहे थे। मैंने मेट्रो स्टेशन से ऑटो किया और लगभग बीस मिनट में मैं उस गली के सामने थी जिस ओर इशारा करते हुए कुसुम ने बताया था कि वह यहीं रहती है। उस पार्क का एक गेट इस गली के सामने भी खुलता था जिसमें हमने कार्यक्रम किया था।

यह जाता हुआ अक्टूबर था, हल्की ठंडी हवाएं चलने लगी थी। ऐसे मैं इन बस्तियों के लोग दोपहर में पार्क में धूप सेंकते और शाम को चूल्हा या अंगीठी जला उसपर काम करते। कभी-कभी हाथ तापते गली के बाहर और गली में घुसते हुए ऐसे ही कई बच्चों, स्त्रियों ओर पुरुषों ने मुझे पहचान लिया। उनमें से कुछ महिलाएं मेरे पास आकर बड़ी इज्जत से बोली, 'दीदी आप तो वहीं हैं ना।' मैंने हल्की मुस्कान के साथ हॉमी भर दी। उन ही में से किसी ने मेरे इस तरह अकेले आने का कारण पूछा। पहले तो मैं थोड़ा ठिठकी फिर थोड़ा संभल कर कहा, 'देखो जल्द ही हम यहां दूसरी मीटिंग करेंगे, आप सभी के साथ शराब बंदी को लेकर। मुझे आप सब का साथ चाहिए। कुछ ऐसी महिलाओ तथा बच्चों से भी बात करनी है जो शराबी पति या बाप के जुल्म का शिकार हैं। मुझे इस सिलसिले में कुसुम और उसकी मां से मिलना है। उनका घर कौन-सा है।

उन महिलाओं में से एक ने कहा, 'ये दो घर छोड़कर जो तीसरा घर है, उसी के ऊपर वाली मंजिल में रहते हैं वे। मैंने धीरे-से उनसे विदा लेते हुए कहा, 'आपमें से कुछ के फोन नम्बर हैं मेरे पास। जैसे ही सब तय होगा कॉल करके बताऊंगी।' आगे बढ़ते हुए अपनी अंतर्मन को मैंने बेहद बेचैन पाया। कुछ ही कदमों पर मैं कुसुम के घर की सीढ़ियों पर थी।

मैंने जैसे ही आवाज लगाई, 'कुसुम-कुसुम' वह भागकर मेरे सामने आ खड़ी हुई। मुझे देखकर उसके

चेहरे पर फिर वही खौफ साफ दिख रहा था। मैंने उसे शांत करते हुए कहा, 'तुम घबराओ मत। मुझे तुम्हारी मां से बात करनी है–कुछ देर।'

तभी उसकी मां भी आ गई। उसने प्रश्न भरी नजरों से मुझे देखा। मैंने नमस्ते कहकर उनसे विनीत स्वर में कहा, 'मुझे आपसे कुसुम के विषय में कुछ बात करनी है। इतना सुनते ही उन्होंने कुसुम को घूरा और कहा, 'जाओ थोड़ी देर नीचे चली जाओ।' और मुझे जल्दी से उस किराए के कमरे में ले गई। शायद वह समझ गई थी कि मुझे क्या बात करनी है।

उसने मेरे सामने ईश्वर का शुक्र मनाया कि उसका बाप वहां नहीं था। वह बेहद बेचैन दिख रही थी। मैंने कहा, 'देखें कुसुम आप की बेटी है। एक मां और एक स्त्री होने के नाते आप नहीं चाहेंगी कि उसके गुनाहगार को सजा मिले। ये आप भी जानती हैं कि कुसुम झूठ नहीं बोल रही।'

पहले तो वह थोड़ी नाराज हुई। कुसुम को ही भला बुरा कहने लगी, 'ये लड़की पागल है, न जाने क्या-क्या कल्पना करती है। डाक्टर कहता है कि ये मानसिक रोगी है। इस लड़की ने मेरी जिंदगी जहन्नुम बनाकर रख दी है। न मेरा मायका रहा, न ससुराल, सब मुझे ताने देते है। ऊपर से इसका जुआरी-शराबी बाप। मैं क्या करूं, कहां ले जाऊं। मैडम आप जो भी हैं। हम पर दया करो। इस पागल की बातों पर मत जाओ।

दिन भर पता नहीं क्या-क्या सोचती रहती है और कहती है। इसका इलाज चल रहा है। मैंने कई जगह रिश्ते की बात भी की है, जितनी जल्दी हो मुझे इसकी शादी करनी है।' मैंने बीच में टोकते हुए कहा, 'अगर ये पागल है और कोरी कल्पना करती है तो ऐसे में कौन शादी करेगा इससे।' तब वह बड़बड़ाती हुई बोली, 'वह सब आप मुझ पर छोड़ दें। मेरी बेटी है। मैं आप देख लूंगी। आपसे हाथ जोड़कर विनती है। आपसे इसने जो भी कहा आप अपने तक ही रखें...। मेरी तकदीर तो वैसे ही फूटी है। मैं बहुत गरीब हूँ। कोर्ट-कचहरी से जाने दूर ही रखें। चाहे ये बात झूठ है या सच पर मेरी बच्ची बदनाम हो जाएगी। आप जानती हैं न दुनिया को। हमें कुछ नहीं करना। कहीं नहीं जाना। मेरी बेटी का तमाशा मत बनाएं। आप एक गरीब मां की मजबूरी समझें।' कहते-कहते वह रो पड़ी। मुझे उसकी और अपनी विवशता पर बहुत झुंझलाहट और दुख हो रहा था। मैंने कहा, 'देख लो अभी समय है तुम अपनी बेटी को न्याय दिलाने के लिए लड़ सकती थी, उसके पक्ष में खड़ी हो सकती थी। सवाल केवल तुम्हारी बेटी का नहीं है। ऐसी अनेक मासूम बेटियों का है जिनके शिकारी दरिंदे हमारे घरों में ही रिश्तों का खोल पहने हुए पल रहे हैं, उन्हें नोच रहे है और हम सब कुछ जानकर भी शर्म व इज्जत का लबादा ओढ़े अन्याय और अत्याचार से आँखें मूंद लेते है, इसीलिए ये भेड़िए हमारे घर और बाहर दनदनाते फिरते हैं। एक बात बताएं, शर्म हम औरतों को ही क्यों आए। इज्जत और बदनामी का डर हमें ही क्यों...। उन दरिंदो को क्यों नहीं। खैर! कभी आपकी अंतर्मन यदि आपको झकझोरे और आपको लगे कि आप अपनी बेटी पर हुए अन्याय के खिलाफ खड़े होना या लड़ना चाहती हैं तो निस्संकोच मुझे इस नम्बर पर कॉल करें। मैं आपके साथ हूं बल्कि हमारा पूरा संगठन आपके साथ है।'

कुसुम की मां फिर हाथ जोड़कर बोली, 'जी मैडम, बस मेरी बिनती है मेरी बेटी के बारे में आप पुलिस से या किसी से भी कुछ मत कहना। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।'

मैंने बस इतना कहा, 'कुसुम बहुत अकेली पड़ गई है। बजाए डांटने-फटकारने के उसे अपनी ममता दो। जरूरत पड़े तो उसकी सहेली बनकर उसे विश्वास में लो ताकि वह अपने मन की हर बात तुम्हें बता सके। बजाए किसी ओर के।' कहकर मैं जल्दी से नीचे उतर गई। शाम के सात बज रहे थे। घर और बाहरवाली बत्तियां जल उठी थी। फिर भी मेरे भीतर जैसे बहुत अंधकार घिर आया था। बहुत दिनों तक इंतजार करने पर भी कोई फोन मुझे नहीं आया। बाद में पता चला कुसुम का परिवार वहां से घर खाली कर कहीं ओर चला गया।

मैंने अपनी एक पुलिस अधिकारी मित्र से जब इस विषय में बात की तो उसका कहना था, 'ऐसे हजारों मामले दर्ज ही नहीं होते। ज्यादातर केस में बच्ची के परिवार वाले आरोपी को ही बचा रहे होते हैं। बच्ची की मेडिकल जांच तक नहीं करवाते। अगर किसी तरह मामला पुलिस तक पहुंच जाए तो, इज्जत का ही हवाला देकर पुलिस वालों से भी सांठ-गांठ कर लेते हैं। पीड़ित बच्चियों का बयान तक नहीं लेने देते। तो बताओ पुलिस भी क्या कर सकती है।' कुसुम के लिए कुछ न कर पाने की कसक मुझे आज भी विचलित कर देती है।❑